

पाठ-2

लाख की चूड़ियाँ

—कामतानाथ जी

पाठ का सार

श्री कामतानाथ जी के द्वारा लिखित 'लाख की चूड़ियाँ' नामक पाठ एक कहानी है। इस कहानी में भारतीय समाज में फैले उन घरेलू उद्योगों के समापन की पीड़ा का वर्णन किया गया है, जो तत्कालीन भारतीय जनजीवन के आधार एवं अर्थोपार्जन के मुख्य साधन थे।

लेखक कहते हैं कि वे बचपन में अपने मामा के गाँव जाया करते थे। मामा के गाँव में एक 'बदलू' नाम का मनहार था और अपना चूड़ी बनाने का पैतृक कार्य ही करता था। वह सुंदर-सुंदर लाख की चूड़ियाँ बनाता था। लेखक उसे 'बदलू काका' कहते थे। लेखक को बदलू इसलिए अच्छा लगता था क्योंकि वह उन्हें लाख की रंग-बिरंगी, सुंदर-सुंदर गोलियाँ बनाकर देता था। वह अपने घर के आगे आँगन में खड़े नीम के पेड़ के नीचे बैठकर दहकती भट्ठी में लाख पिघलाकर उसे चूड़ियों का आकार देता था। वह चूड़ियाँ बनाते समय बीच-बीच में हुक्का पीता रहता था। सभी स्त्रियाँ उसकी बनाई हुई चूड़ियाँ ही पहनती थीं। वह बहुत सीधा-सादा आदमी था। वह चूड़ियाँ पैसे लेकर नहीं बेचता था, बल्कि चूड़ियों के बदले अनाज लेता था। शादी-विवाह के अवसर पर वह बहुत ज़िद करता था और चूड़ियों के जोड़े के बदले अपने लिए तथा अपनी पत्नी के लिए कपड़े, अनाज तथा पैसे सब कुछ लेता था।

लेखक बताते हैं कि उनके पिता जी का तबादला दूर गाँव में हो गया था इसलिए वे आठ-दस वर्षों के बाद मामा के गाँव गए। अब वे बड़े हो गए थे अतः गोलियों में उनकी कोई रुचि नहीं रही। इसीलिए उन्हें बदलू का ध्यान नहीं रहा। एक दिन उनके मामा की लड़की गिर गई और उसकी काँच की चूड़ी टूटकर उसके हाथ में घुस गई। लेखक ने उसकी मरहम पट्टी की। उसी समय उन्हें बदलू का ध्यान आया और वे उससे मिलने चले गए। लेखक ने उसे नमस्ते किया, किंतु बदलू ने उन्हें नहीं पहचाना। लेखक ने उसे बताया कि वे जनार्दन हैं, बचपन में उससे गोलियाँ बनवाकर ले जाते थे। उसे याद आ गया। लेखक ने उससे काम के बारे में पूछा तो उसने कहा कि काम कई साल से बंद है। अब काँच का प्रचार हो गया है। मशीनी युग है। काँच की चूड़ियाँ सुंदर होती हैं। अतः काँच की चूड़ियाँ ही आजकल औरतें पहनती हैं। उसे खाँसी आ रही थी। वह बीमार था तथा उसकी आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थी।

लेखक ने महसूस किया कि उसके अंदर कोई बहुत बड़ा दर्द छिपा हुआ है। अतः वे सोचते रहे कि मशीनी युग ने न जाने कितने हाथ काट दिए। उसके बाद विषय बदलते हुए लेखक ने उससे आम की फसल के बारे में पूछा। उसने आम की फसल बहुत अच्छी बताई और उनके लिए अपनी बेटी रज्जो के हाथों आम मँगवाए। लेखक की निगाह रज्जो की कलाई पर अटक गई क्योंकि उसकी

गोरी कलाई पर लाख की चूड़ियाँ बहुत अच्छी लग रही थीं। बदलू ने लेखक की निगाह देखकर बताया कि चूड़ियों का वह जोड़ा उसने जमींदार साहब की बेटी के विवाह के अवसर पर आखिरी बार बनाया था। जमींदार उसे दस आने पैसे दे रहे थे, किंतु उसने उतने कम पैसे में उसे बेचा नहीं, और कहा 'शहर से ले आओ।'

लेखक आम खाकर चले गए किंतु उन्हें इस बात की खुशी हुई कि बदलू ने हारकर भी हार नहीं मानी। उसका व्यक्तित्व काँच के समान नहीं था जो टूटकर बिखर जाता।

शब्दार्थ

लाख = लाल रंग का एक प्राकृतिक पदार्थ; **मन मोह लेना** = आकर्षित करना; **सहन** = आँगन; **चौखट** = लकड़ी का चौकोर ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले जड़े जाते हैं; **बेलनानुमा** = बेलन के आकार का; **सलाख** = सलाई, धातु की छड़; **मुँगरी** = गोल मुठियादार लकड़ी जो ठोकने-पीटने के काम आती है; **पश्चात** = बाद में; **कार्य** = काम; **मचिया** = सुतली आदि से बुनी बैठने की छोटी चौकी; **नव-वधू** = नई दुलहन; **मनिहार** = चूड़ी बनाने वाला; **पैतृक** = पूर्वजों का, पुश्तैनी; **पेशा** = धंधा, कारोबार, व्यापार; **खपत** = माल की बिक्री; **वस्तु-विनिमय** = वस्तुओं का आदान-प्रदान।

पाठ-3

बस की यात्रा

—हरिशंकर परसाई

पाठ का सार

प्रसिद्ध लेखक श्री हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित 'बस की यात्रा' एक व्यंग्यात्मक लेख है। लेखक और उनके मित्रों ने तय किया कि वे शाम चार बजे की बस से पन्ना जाएँगे, क्योंकि वहाँ से सतना के लिए इसी कंपनी की बस मिलती है जो जबलपुर की ट्रेन तक पहुँचा देती है। लेखक कहते हैं कि उनके दो साथियों को सुबह काम पर हाज़िर होना था। इसलिए इसी रास्ते से जाना उन्हें उचित लगा। हालाँकि कुछ समझदार लोगों ने इस बस से जाने के लिए उन्हें मना किया क्योंकि बस की हालत बिल्कुल खस्ता थी, किंतु वे न माने। उनके साथ उसी बस से बस कंपनी के हिस्सेदार भी जा रहे थे। लेखक ने उनसे पूछा कि यह बस चलती है तो उन्होंने कहा कि चलती क्यों नहीं, अभी चलेगी।

थोड़ी देर में इंजन सचमुच स्टार्ट हो गया। इंजन के स्टार्ट होते ही पूरी बस हिलने लगी मानो पूरी बस ही इंजन हो। ऐसा लगा मानो हम बस के अंदर नहीं बल्कि इंजन के भीतर बैठे हैं। उस बस के अधिकांश काँच टूट चुके थे। जो बचे थे उनसे उन्हें बचना था। बस चल पड़ी। पर उसका हर हिस्सा दूसरे से असहयोग कर रहा था। ऐसा लगता था कि सीट बस की बाँड़ी को छोड़कर आगे निकल जाएगी। समझ नहीं आता था कि सीट पर वे बैठे हैं या सीट उनके ऊपर बैठी है।

अचानक बस रुक गई। पता चला कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर बगल में रखा और नली से इंजन में डालने लगा। बस चली। उसकी रफ़्तार पंद्रह-बीस मील हो गई थी। लेखक को उस पर भरोसा नहीं था। उन्हें लगता था कि ब्रेक कभी भी फेल हो सकती है, स्टीयरिंग टूट सकता है। बस किसी पेड़ से टकरा भी सकती है। अतः उन्हें हर पेड़ दुश्मन के समान लग रहा था। किसी झील के आते उन्हें लगता कि बस उसमें गोता ज़रूर लगाएगी। अचानक बस फिर रुक गई। ड्राइवर ने बहुत उपाय किए किंतु सफलता न मिली। बस ही हालत एक बूढ़ी स्त्री की भाँति बड़ी दयनीय थी। ऐसा लग रहा था कि मानो उसकी अंत्येष्टि यहीं करनी पड़ेगी।

हिस्सेदार ने इंजन खोला और सँभाला। बस आगे चली। उसकी चाल और कम हो गई। उसकी लाइट ने भी जवाब दे दिया, मानो वह चाँदनी रात में रास्ता ढूँढ़कर चल रही थी। दूसरी बसे आतीं और चली जाती थीं। वे एक पुलिया पर पहुँचे ही थे कि टायर पंचर हो गया। बस जोर से हिलकर रुक गई। अगर बस स्पीड में होती तो वह नाले में गिर जाती। लेखक कहते हैं कि कंपनी के हिस्सेदार टायरों की हालत जानते थे, फिर भी नए टायर नहीं खरीदे। उन्हें स्वयं मरने का भी डर नहीं

है। लेखक व्यंग्यपूर्वक कहते हैं कि कितना महान आदमी है वह, जिसने एक टायर के लिए अपनी जान दाव पर लगा दी, किंतु टायर नहीं बदलवाया।

दूसरा घिसा टायर लगाकर बस फिर चल पड़ी, किंतु उन सबने वक्त पर पन्ना पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी, बल्कि यूँ कहना चाहिए कि वहाँ तक पहुँचने की ही उम्मीद छोड़ दी। पन्ना क्या, कहीं भी पहुँचने की उम्मीद छोड़ दी। बड़े इत्मीनान से घर की तरह बैठ गए और चिंता छोड़ दी। तब हँसी-मज़ाक होने लगे।

शब्दार्थ

डाकिन = डाका डालने वाली; वयोवृद्ध = बहुत बूढ़ी; सदियों = युगों के; अनुभव = तजुर्बा; योग्य = लायक; हिस्सेदार = भागीदार; अनुभवी = जिसे अनुभव हो; विश्वसनीय = विश्वास करने योग्य; अंतिम = आखिरी; रंक = भिखारी; कूच करना = आगे बढ़ना, चलना; निमित्त = कारण, उद्देश्य; असहयोग = साथ न देना; सविनय = विनम्रता के साथ; अवज्ञा = अनादर, कानून को न मानना; क्षीण = मद्धम, हल्का; दयनीय = दया दिखाने योग्य; वृद्धा = बुढ़िया; ग्लानि = अपने आप पर शर्म महसूस होना; प्राणांत = मृत्यु;।

पाठ-4

दीवानों की हस्ती

—भगवतीचरण वर्मा

कविता का सार

‘दीवानों की हस्ती’ कविता श्री भगवतीचरण वर्मा के द्वारा रची गई है। इस कविता में कवि ने स्वतंत्रता के दीवानों के निर्भीक, स्वच्छंद एवं मस्ती भरे जीवन का वर्णन किया है। कवि कहते हैं कि ये आज़ादी के दीवाने हैं, जो देश को स्वतंत्र कराने के लिए अपना बलिदान देने से भी नहीं कतराते। साथ ही वे कहते हैं कि देश की महानता के आगे उनकी कोई हस्ती या हैसियत नहीं है। वे एक जगह स्थिर होकर नहीं रहते। वे आज यहाँ हैं तो कल वहाँ चल देते हैं। वे धूल उड़ाते हुए जहाँ भी जाते हैं, मस्ती का आलम उनके साथ ही चलता है। वे जहाँ जाते हैं वहाँ खुशी का वातावरण छा जाता है और उनके चले जाने से वहाँ उदासी छा जाती है। उसके सगे-संबंधी कहते ही रह जाते हैं कि कैसे अचानक आए और कहाँ जा रहे हो? इन दीवानों को तो देश के हित में चलना है अर्थात् कभी इधर-कभी उधर जाना पड़ता है इसलिए उनसे यह मत पूछो कि वे कहाँ जा रहे हैं। वे संसार की भावनाओं को साथ लिए जा रहे हैं और अपनी यादें संसार को दिए जा रहे हैं। वे सुख और दुख को समान रूप से सहते हैं। इसलिए सबसे सुख-दुख की दो बातों करके वे हँस और रो लेते हैं। यह दुनिया किसी को देती नहीं, अपितु माँगती रहती है। अतः ये दीवाने अपना प्रेम न्योछावर करते जा रहे हैं, किंतु इसके हृदय पर एक ही भार है कि देश को स्वतंत्र कराने में वे असफल रहे। देशवासियों को उनकी शुभकामनाएँ हैं कि वे आबाद रहें। ये दीवाने अपनी इच्छा से जल में बंद हुए थे तथा अपनी इच्छा से ही अपना बलिदान देकर इस दुनिया से जा रहे हैं।

शब्दार्थ

दीवाने = स्वाधीनता सेनानी जो अलमस्त है; मस्ती = खुशी; आलम = संसार, दुनिया, माहौल ; उल्लास = प्रसन्नता; छककर = जी भरकर; भिखमंगों = भीख माँगने वाले; स्वच्छंद = अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला; निसानी = निशानी; असफलता = सफलता न मिलना; आबाद = बसना।

पाठ-6

भगवान के डाकिए

—रामधारी सिंह दिनकर

कविता का सार

हिंदी के प्रसिद्ध कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित 'भगवान के डाकिए' नामक कविता में पक्षी और बादलों को भगवान के संदेशवाहक बताया गया है। कवि कहते हैं कि पक्षी और बादल दोनों ही आकाश में उड़ते हुए या विचरण करते हुए एक देश से दूसरे देश जाते रहते हैं। ये भगवान का संदेश लेकर एक बड़े देश से दूसरे बड़े देश को जाते हैं। हम मनुष्य उनकी लाई हुई चिट्ठियाँ नहीं पढ़ पाते। अतः उनका संदेश नहीं समझ पाते। जबकि पेड़, पाथे, पानी और पहाड़ उनकी चिट्ठियों को पढ़ लेते हैं और उनका संदेश समझ लेते हैं।

कवि का मानना है कि हम लोग प्राकृतिक क्रियाकलाप के पीछे छिपे उनके प्रयोजन या उद्देश्य को नहीं समझ पाते। हम केवल इतना ही समझ पाते हैं कि धरती एक स्थान की खुशबू को दूसरे स्थान पर भेजती है। यह खुशबू हवा में तैरते हुए पक्षियों के पंखों के साथ उड़कर अन्य देशों में फैल जाती है। इसी प्रकार बादल एक देश का पानी भाप के रूप में लेकर दूसरे देश में पानी के रूप में बरसाते हैं। किंतु कविता में कवि केवल इतना ही नहीं कहना चाहते। वे कहना चाहते हैं कि ईश्वर हमें यह संदेश दे रहे हैं कि पूरी पृथ्वी एक है। किसी एक को नहीं सबकी है। सबको एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए और मिल-जुलकर रहना चाहिए।

शब्दार्थ

महादेश = बहुत बड़ा देश; बाँचते हैं = पढ़ते हैं; आँकना = अनुमान करना; सौरभ = सुगंध, खुशबू; पाँख = पंख; तिरता है = बहता है।

पाठ-7

क्या निराश हुआ जाए

—हजारी प्रसाद द्विवेदी

पाठ का सार

‘क्या निराश हुआ जाए’ एक विचारात्मक निबंध है, जो हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की अनुपम रचना है। इस निबंध में लेखक ने संसार में बढ़ते छल-कपट, चोरी-डकैती एवं भ्रष्टाचार का वर्णन किया है।

लेखक कहते हैं कि समाचार-पत्रों में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचारों को पढ़कर मेरा मन बैठ जाता है। समाज में आरोप-प्रत्यारोप के वातावरण में कोई आदमी ईमानदार नहीं दिखाई देता है। हर आदमी पर संदेह होता है। जो लोग जितने ऊँचे पद पर काम करते हैं उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

आदमी कोई भी काम करे लाग उसमें दोष अवश्य ढूँढ़ते हैं। गुणों को भुलाकर दोषों का बढ़ा-चढ़ाकर बखान करते हैं। अतः आदमी में गुण कम दोष अधिक दिखाई देते हैं। पता नहीं तिलक, गाँधी, रवींद्रनाथ ठाकुर तथा मदन मोहन मालवीय के सपने का संस्कृति-सभ्य भारत कहाँ खो गया। पता नहीं आर्य, द्रविण, हिंदू, मुसलमान, यूरोपीय तथा भारतीय आदर्शों की मिलन भूमि ‘मानव महा समुद्र’ सूख गया है क्या? पर कुछ भी हो यह हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि ईमानदारी से मेहनत करके कमाने-खाने वाले लोग दुखी हैं तथा छलकपट और बेईमानी करने वाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदारी को मूर्खता समझा जाता है। भारतवर्ष ने काम, क्रोध, लोभ, मोह को कभी अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। हमेशा ही उन्हें संयम से बाँधकर रखा। किंतु भूखे को रोटी तथा बीमार को दवा अवश्य चाहिए। इसी प्रकार गुमराह को ठीक रास्ते पर लाने के लिए प्रयास भी अवश्य करने पड़ते हैं।

भारत के करोड़ों गरीबों की गरीबी दूर करने के लिए तथा कृषि, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति सुधारने के लिए अनेक कायदे-कानून बनाए गए किंतु जो लोग काम करने वाले थे उन्होंने गरीबों की गरीबी-दूर करने के बजाए अपना जीवन अधिक सुधारा। जो लोग धर्म से डरते हैं, उन लोगों ने कानून को खूब धोखा दिया। इतना सब कुछ होते हुए भी इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता, कि ऊपर से आदमी कितना भी बुरा हो किंतु अंदर से वह ईमानदार, सच्चा, आध्यात्मिक, सेवाभावी तथा स्त्री रक्षक है।

समाचार-पत्रों में भ्रष्टाचार के प्रति जो इतना क्रोध है, वह यही बताता है कि हम बुराई को बुरा मानते हैं तथा बेईमान और धोखेबाज़ लोगों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं बुराई तथा दोषों का

पर्दाफाश करना बुरा नहीं है किंतु बुराई में रस लेना बुरा है। अच्छाई में रस लेकर सबको न बताना सबसे ज़्यादा बुरा है क्योंकि अच्छाई को उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छी भावना उत्पन्न होती है।

लेखक कहते हैं कि एक बार रेलवे स्टेशन पर मैंने टिकट लेते समय दस रुपये के नोट के स्थान पर गलती से सौ रुपये का नोट दे दिया और चला आया। टिकट बाबू मुझे खोजता हुआ मेरे डिब्बे में आया और मुझे नब्बे रुपये देकर बोला कि यह बहुत गलती हो गई। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा। वह पैसे लौटाकर बहुत संतुष्ट था।

लेखक बताते हैं कि एक बार मैं अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ बस से यात्रा कर रहा था। बस खराब थी तथा गंतव्य से आठ किलोमीटर पहले ही रुक गई। कंडक्टर ने साइकिल उठाई और चलता बना। लोगों को लगा कि बस का ड्राइवर तथा कंडक्टर उन्हें धोखा दे रहे हैं। गर्मी के कारण मेरे बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। सब यात्री कहने लगे कि कंडक्टर डाकुओं को बुलाने गया है। दो दिन पहले भी यहाँ एक बस लूटी गई थी। लोग डर गए। कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़कर उसे मारने का हिसाब बनाया। ड्राइवर घबरा गया। उसने कातर ढंग से मुझसे कहा कि हम लोग बस का उपाय कर रहे हैं। मुझे बचाइए ये लोग मुझे मारेंगे। लोग उसे मारने पर उतारू थे, पर किसी तरह ड्राइवर को बचाया। लोगों ने ड्राइवर को मारा नहीं उसे बस से उतारकर एक जगह घेर कर बैठ गए। लोगों ने सोचा कि यदि कोई दुर्घटना हुई तो ड्राइवर को मार देंगे।

उसी समय एक खाली बस आती दिखाई दी। उसमें हमारा बस कंडक्टर भी था। कंडक्टर ने आते ही कहा, “मैं अड्डे से नई बस लाया हूँ। फिर मेरे पास आकर बोला कि मैं बच्चों के लिए पानी और दूध लाया हूँ।” सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफ़ी माँगी और हम बारह बजे से पहले ही बस अड्डे पहुँच गए।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता खत्म हो गई। दया-माया नहीं रही।

ठगा भी गया हूँ धोखा भी खाया है किंतु विश्वास घात कम ही होता है। यदि बुरी बातों का ही हिसाब रखेंगे तो जीवन दुखमय हो जाएगा। ऐसी घटनाएँ अधिक हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है। निराश मन को ढाँढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। रवींद्र नाथ ठाकुर ने अपने प्रार्थना गीत में यही प्रार्थना की है कि हे ईश्वर! यदि दुनिया में केवल नुकसान ही उठाना पड़े और धोखा ही खाना पड़े तो ऐसी शक्ति देना कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

मनुष्य की बनाई नितियाँ गलत साबित हो रही है। अतः उन्हें बदला जा रहा है। आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान भारत वर्ष की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी। अतः निराश होने की ज़रूरत नहीं है।

शब्दार्थ

मन बैठना = निराश होना; तस्करी = चोरी का व्यापार; आरोप = इलजाम; प्रत्याराप = बदले में इजजाम; वातावरण = माहौल; अतीत = बीता हुआ समय; गह्वर = गड्ढा; मनीषी = बुद्धिमान, विचारशील मनुष्य; जीविका = कमाई का साधन; निरीह = जिसे किसी वस्तु की इच्छा न हो, उदासीन, विरक्त, नम्र, शांत; श्रमजीवी = मेहनत करने वाला मजदूर वर्ग; फल-फूल रहे हं = उन्नति कर रहे हैं; पर्याय = समानार्थक शब्द; धर्मभीरु = जिसे धर्म छटने का भय हो, अधर्म से जो डरता हो; आस्था = विश्वास; भौतिक = सांसारिक; संग्रह = एकत्रित; आंतरिक = हृदय के; चरम और परम = सबसे ऊपर, प्रधान, मुख्य; उपेक्षा = अवहेलना, आपरवाही; कोटि = करोड़; अवस्था = दशा; सुचारु = सुंदर; त्रुटियों = कमियों, दोषों; लक्ष्य = उद्देश्य; प्रमाण = सबूत; आध्यात्मिकता = आत्मा-परमात्मा के प्रति विश्वास।

पाठ-9

कबीर की सखियाँ

—कबीरदास

साखियों का सार

‘कबीर की साखियाँ’ नामक पाठ में कबीरदास ने इन नीतिपरक दोहों के द्वारा मनुष्य को विविध प्रकार की सीख दी है।

पहले दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि सज्जन और महात्माओं से ज्ञान की बातें ही पूछनी चाहिए, उसकी जाति के बारे में नहीं।

दूसरे दोहे में कबीरदास जी कहते हैं कि यदि कोई व्यक्ति हमें एक गाली दे तो उसके जवाब में हमें गाली नहीं देनी चाहिए क्योंकि ऐसा करने से झगड़ा बढ़ जाता है। गाली न देने से झगड़ा नहीं होता और बात वहीं खत्म हो जाती है।

तीसरे दोहे में कबीरदास जी ढोंगी तथा आडंबर साधु-महात्माओं की पोल खोलते हुए कहते हैं कि हाथ में माला के दाने घुमाते हुए और मुँह में राम-राम जपते हुए भी उनका मन दसों दिशाओं में भटकता रहता है। अतः यह सब ईश्वर का सही स्मरण नहीं है।

चौथे दोहे में कबीरदास जी हमें शिक्षा देते हैं कि पैरों के नीचे पड़ी घास की भी निंदा नहीं करनी चाहिए क्योंकि वह जब आँख में पड़ जाती है तो बहुत कष्ट देती है।

पाँचवे दोहे में कबीरदास जी कहते हैं यदि हमारा मन शांत और शीतल है तो संसार में हमारा कोई शत्रु नहीं होगा, क्योंकि जब हम अपने घमंड को छोड़ देते हैं तो हम विनम्रतापूर्वक सबसे व्यवहार करते हैं और इसीलिए हमारा कोई शत्रु नहीं होता तथा सभी हमारे ऊपर दया करते हैं।

शब्दार्थ

ज्ञान = ज्ञान की बातें; म्यान = तलवार रखने का खोल; मोल = मूल्य, कीमत; आवत = आती हुई; गारी = गाली; उलटत = जवाब में गाली देने से; होइ = होती है; माला = साधुओं की जप करने की माला; फिरै = फिरती है, चलती है; जीभि = जीभ; माँहि = में; मुनवां = मन; दहुँ दिसि = दसों दिशाओं में; तौ = तो; सुमिरन = स्मरण, ईश्वर को याद करना; नाहिं = नहीं; निंदिए = निंदा कीजिए; पाऊँ = पैर; तलि = तले, नीचे; उडि = उड़कर; पड = पड़ जाए; खरी = बहुत; दुहेलो = पीड़ा; बैरी = दुश्मन; सीतल = शीतल-शांत; होय = होता है; आपा = अहंकार, घमंड; डारि दे = छोड़ दें।

विशेषण के भेद

(सूत्र - गुसा पास कर)

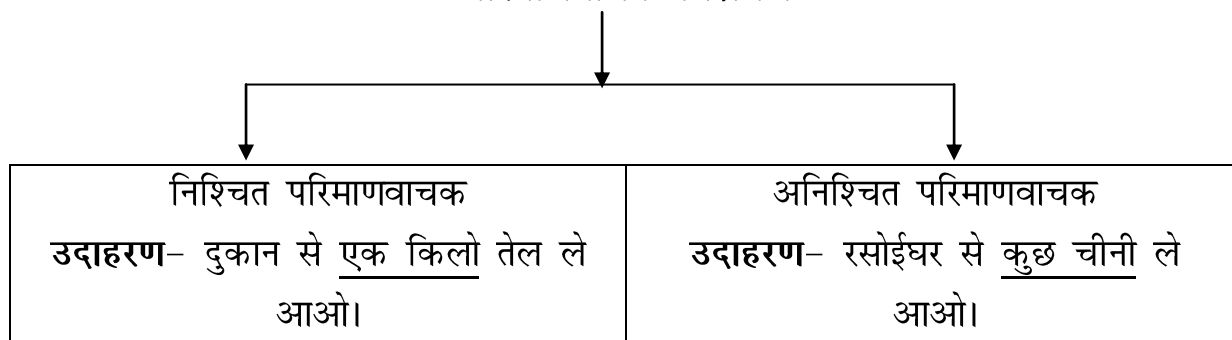
गु - गुणवाचक विशेषण → गुण अथवा दोष

सा - सार्वनामिक विशेषण → संज्ञा से पहला शब्द सर्वनाम

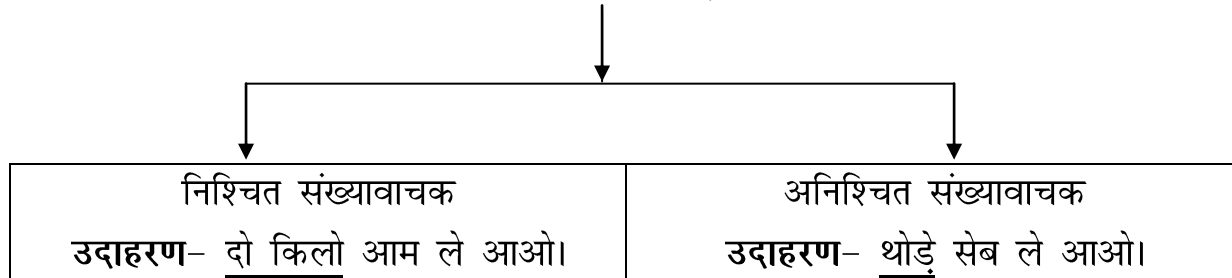
पा - परिमाणवाचक विशेषण → जिसे उंगलियों पर न गिन सकें।

स - संख्यावाचक विशेषण → जो उंगलियों पर गिना जा सके।

परिमाणवाचक विशेषण

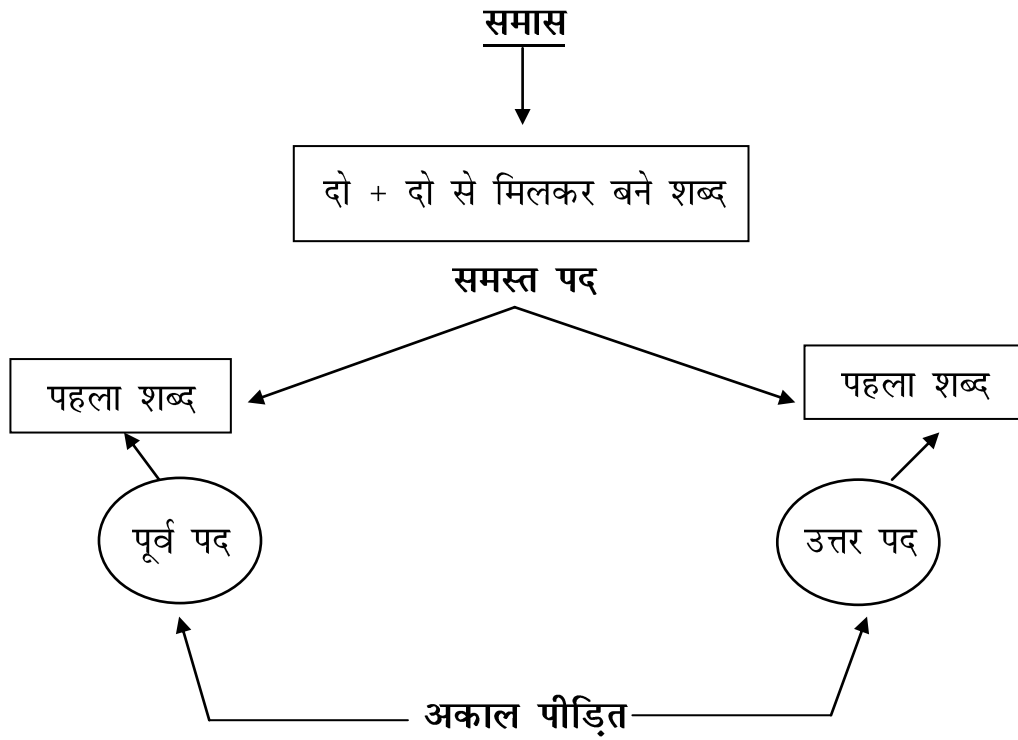


संख्यावाचक विशेषण



समास

परस्पर संबंधित दो या दो से अधिक शब्दों के मेल को समास कहते हैं।

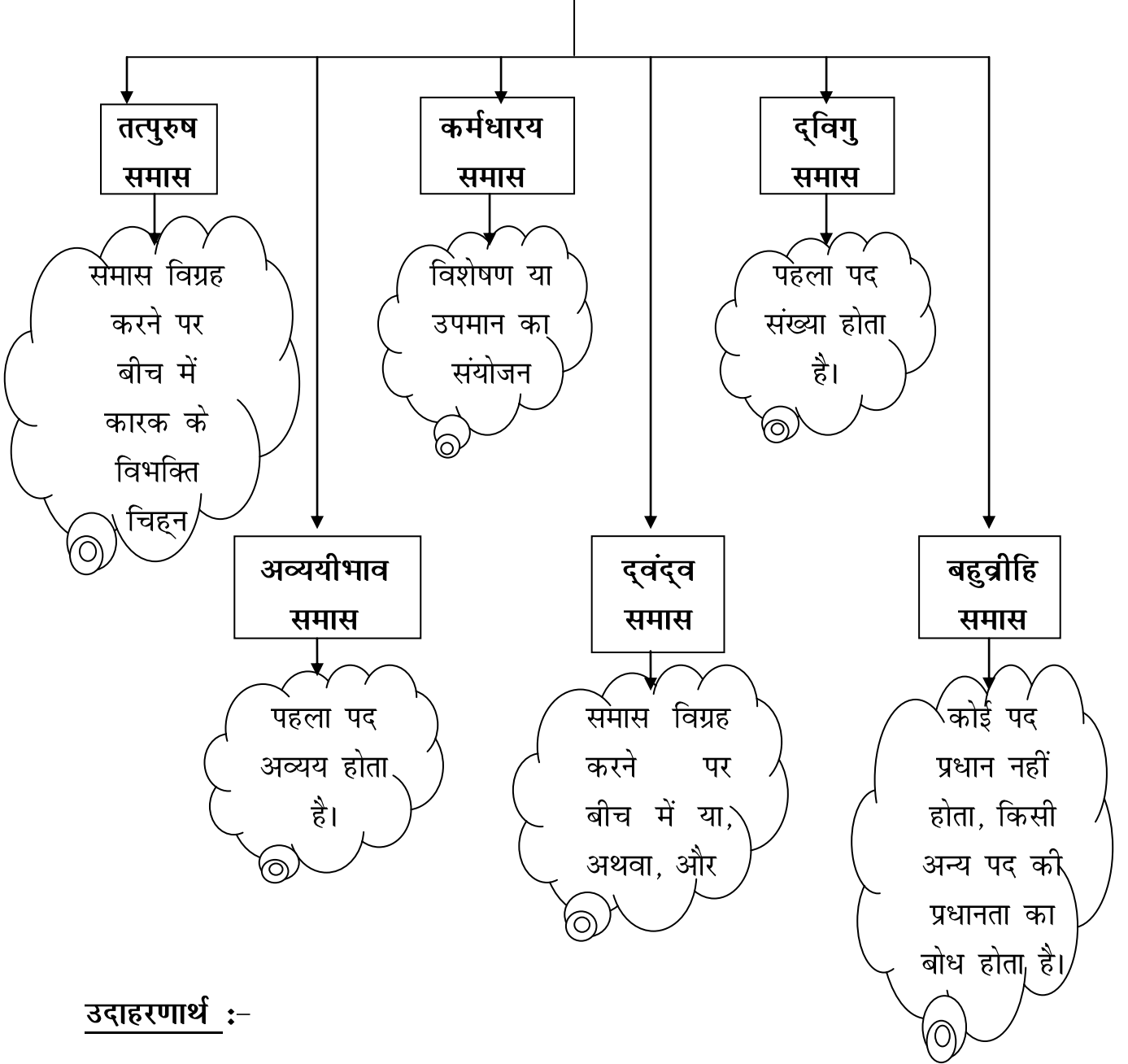


समास के भेद

तोतला बच्चा अपने कम आम देखकर दो और आम पाकर बहुत खुश हो जाता है।

तोतला	-	तत्पुरुष समास
अपने	-	अव्ययीभाव समास
कम	-	कर्मधारय समास
देखकर	-	द्वंद्व समास
दो	-	द्विगु समास
बहुत	-	बहुव्रीहि समास

समास



उदाहरणार्थ :-

1. तत्पुरुष समास

(समस्त पद)

रसोईघर

(समास विग्रह)

रसोई के लिए घर

विभक्ति चिह्न

2. अव्ययीभाव समास

(समस्त पद)

यथासंभव



अव्यय

(समास विग्रह)

जैसा संभव हो

3. कर्मधारय समास

(समस्त पद)

प्राधनमंत्री



विशेषण

(समास विग्रह)

प्रधान है जो मंत्री

4. द्वंद्व समास

(समस्त पद)

माता-पिता

(समास विग्रह)

माता और पिता

5. द्विगु समास

(समस्त पद)

शताब्दी



सौ (संख्या)

(समास विग्रह)

सौ सालों का समूह

6. बहुब्रीहि समास

(समस्त पद)

नीलकंठ

(समास विग्रह)

नीला है जिसका कंठ (शिव)



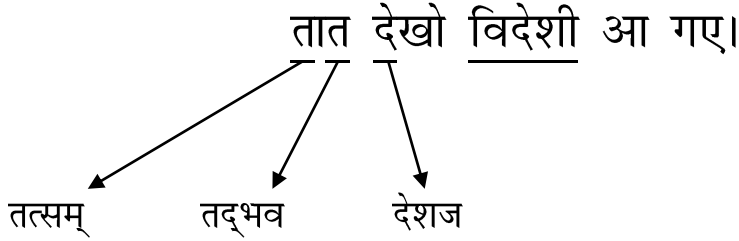
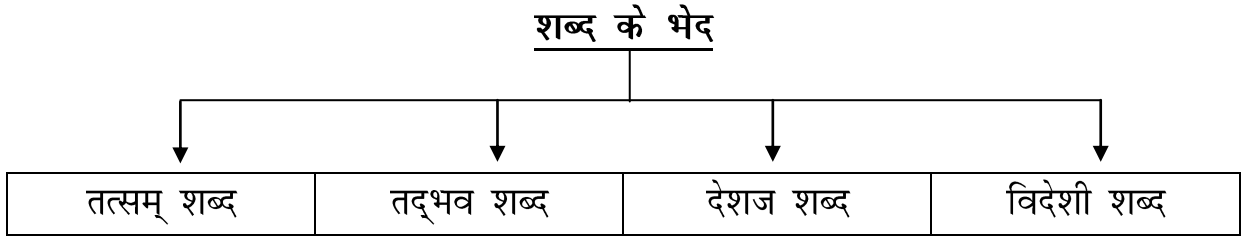
अन्य पद प्राधन

शब्द विचार

वर्णों के सार्थक मेल से बनी स्वतंत्र और सार्थक ध्वनि शब्द कहलाती है।

कमल और कमल शब्दों की रचना वर्णों के सार्थक मेल से हुई है जबकि लमक का कोई अर्थ नहीं।

उत्पत्ति के आधार पर



1. **तत्सम् शब्द**– ये शब्द संस्कृत से बिना किसी परिवर्तन के हिन्दी में ले लिए गए।

जैसे– सूर्य

कुछ तत्सम् शब्द– संध्या, छिद्र, कर्ण, मीत, ग्राम, प्रस्तर, रात्रि, जिह्वा आदि।

2. **तद्भव शब्द**– ये संस्कृत के वे शब्द हैं जो परिवर्तित होकर हिन्दी में प्रचलित हो

गए। जैसे– सूरज

कुछ तद्भव शब्द– जीभ, रात, छेद, सांझ, मित्र, पत्थर, सपना आदि।

3. देशज शब्द- जो शब्द क्षेत्रीय प्रभाव के कारण हिन्दी में प्रचलित हो गए वे देशज

शब्द कहलाए। जैसे- डिबिया, जूता, लकड़ी आदि।

कुछ देशज शब्द- खिचड़ी, तोंद, खुरपी, रोटी, बेटा आदि।

4. विदेशी शब्द- जो शब्द संसार के विभिन्न देशों की भाषाओं से हिन्दी में आ गए

वे विदेशी या विदेशज अथवा आगत शब्द कहलाए।

जैसे- लालटेन, अमरूद आदि।

कुछ विदेशी शब्द

अरबी- अखबार, अदालत, इस्तीफा, औरत, कब्र, कसम, कसाई, कागज़।

फ़ारसी- अंदाजा, अचार, आमदनी, कारीगर, कमर, खराब, खरीद, गरदन, गुलाब, चीज,

जगह, कद्दू

अंग्रेजी- अपील, आइस्क्रीम, ऑर्डर, इंच, कंट्रोल, कार्बन, क्रिकेट, ड्राइवर, टिकट

पुर्तगाली- अलमारी, तौलिया, परात, पादरी, साबुन, कमरा

तुर्की- कुरता, कुली, कैची, चाकू, तोप, बंदूक, बेगम

फ्रांसीसी- काजू, कूपन, कारतूस

चीनी- चाय, लीची

जापानी- रिक्शा

सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे- मैं, तुम, हम आदि।

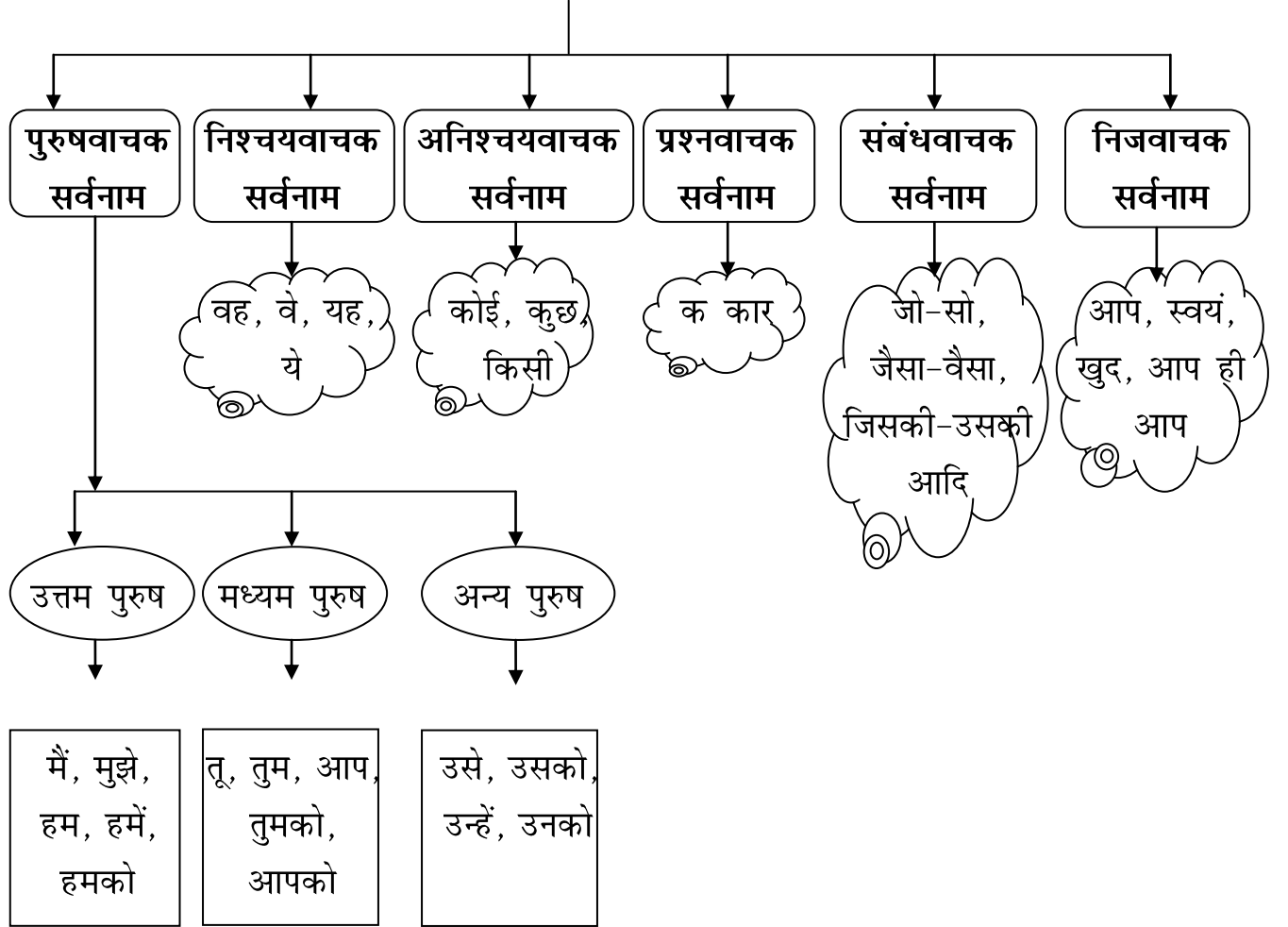
<u>सर्व</u>	+	<u>नाम</u>
सबका		नाम

सर्वनाम के भेद

एक पुरुष (1) गोलगप्पे खाने का निश्चय (2) करता है। गोल-गप्पे वाले के गंदे हाथ देखकर खाने का अनिश्चय (3) करता है और स्वयं से प्रश्न (4) पूछता है कि मैं क्या खाने वाला था। वापिस आते हुए उसे संबंधी (5) मिलते हैं जो उसके बहुत निजी (6) हैं।

पुरुष	-	पुरुषवाचक सर्वनाम
निश्चय	-	निश्चयवाचक सर्वनाम (संकेतवाचक सर्वनाम)
अनिश्चय	-	अनिश्चयवाचक सर्वनाम
प्रश्न	-	प्रश्नवाचक सर्वनाम
संबंधी	-	संबंधवाचक सर्वनाम
निजी	-	निजवाचक सर्वनाम

सर्वनाम के भेद



उदाहरणार्थ

वाक्यों के माध्यम से सर्वनाम के भेदों की पहचान करना।

1. उसने बताया था कि वह अगले माह शिमला जाएगा।

पुरुषवाचक सर्वनाम → उसने, वह

2. यह मेरा घर है।

निश्चयवाचक सर्वनाम → यह

3. बाहर कोई खड़ा है।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम → कोई

4. तुम इतनी रात को कहाँ से आ रहे हो?

पुरुषवाचक सर्वनाम → कहाँ

5. जैसी करनी, वैसी भरनी

संबंधवाचक सर्वनाम → जैसी - वैसी

6. यह पत्र मैंने स्वयं लिखा है।

निजवाचक सर्वनाम → स्वयं

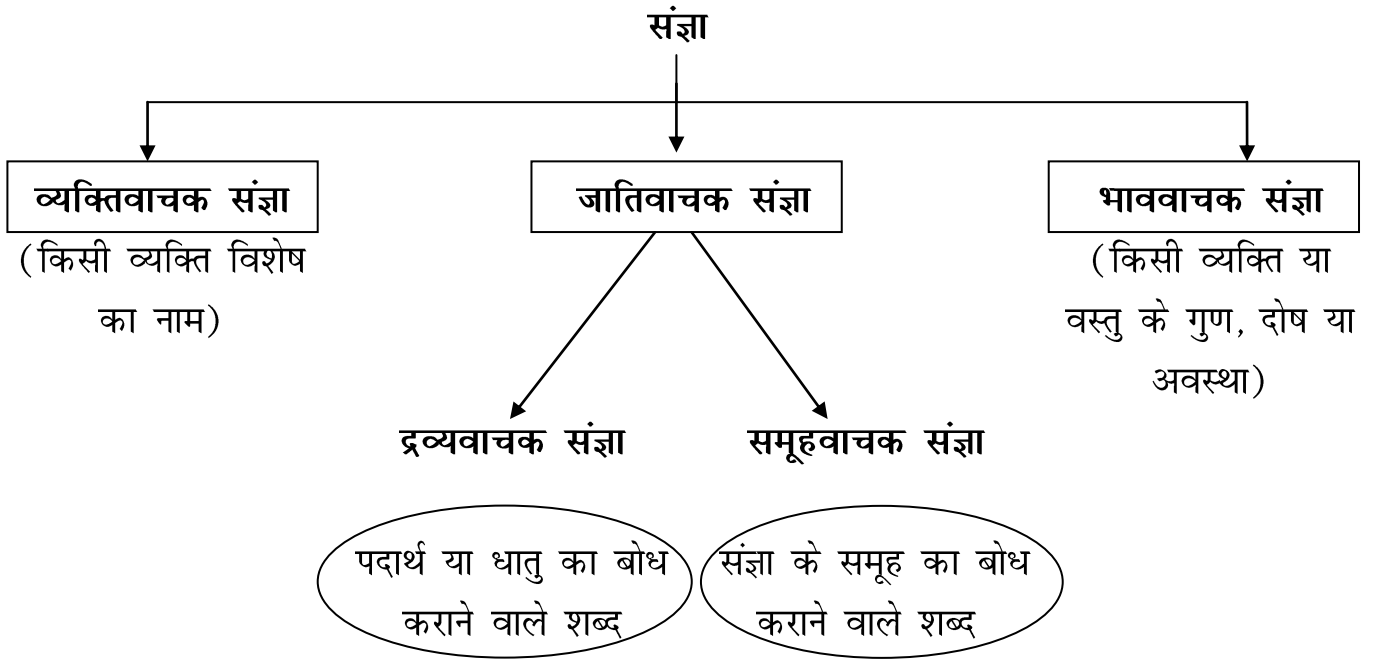
संज्ञा

किसी व्यक्ति, प्राणी, वस्तु, स्थान या भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं। जैसे- रामायण, लड़का, कड़वाहट आदि।

संज्ञा का संबंध सीधे-सीधे किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, स्थान या भाव के नाम से होता है।

संज्ञा के भेद

प्रत्येक व्यक्ति किसी जाति से संबंध रखता है तथा जाति के लिए उसके मन में भाव होते हैं।



उदाहरणार्थ

1. राजीव की सच्चाई ने सबका दिल जीत लिया।

राजीव → व्यक्तिवाचक संज्ञा

2. जंगल में शेर राजा होता है।

शेर → जातिवाचक संज्ञा

3. करेले में कितनी कड़वाहट है।

कड़वाहट → भाववाचक संज्ञा

4. सैनिक अपनी सेना के साथ बोर्डर पर गए।

सैनिक → जातिवाचक संज्ञा

सेना → समूहवाचक संज्ञा

5. सुहाना के गले में सोने का हार है।

सुहाना → व्यक्तिवाचक संज्ञा

सोना → द्रव्यवाचक संज्ञा

वर्ण-विचार

उस छोटी से छोटी मूल ध्वनि को वर्ण कहते हैं, जिसके खण्ड (तोड़ा) न किए जा सकें।

जैसे- अ, ई, ऊ, ऐ, क्, च्, ट्, त् + प्

वर्णमाला

वर्णमाला शब्द का अर्थ है - वर्णों का समूह या कहा जा सकता है वर्णों का निश्चित समूह।

उदाहरणार्थ-

स्वर									
------	--	--	--	--	--	--	--	--	--

आ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

अयोगवाह									
---------	--	--	--	--	--	--	--	--	--

अं अः

व्यंजन									
--------	--	--	--	--	--	--	--	--	--

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
	ष	स	ह	

अन्य व्यंजन

ड़

ढ़

संयुक्त व्यंजन

क्ष

त्र

ज्ञ

श्र

★ प्रत्येक व्यंजन के साथ स्वर जुड़ा होता है क्योंकि व्यंजन दो वर्णों के मेल से बनता है।

उदाहरण- क = क् + अ

म = म् + अ

व्यंजन के साथ स्वर का जो रूप जुड़ा होता है, उसे मात्रा कहते हैं।

स्वर	अ	आ	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
मात्राएँ	-	।	,	.				।	।

★ 'अ' स्वर की कोई मात्रा नहीं होती लेकिन सभी व्यंजनों का उच्चारण अथवा लेखन 'अ' मिलाकर ही किया जाता है। अगर व्यंजन में 'अ' नहीं है तो वह वर्ण हो जाएगा और उसके नीचे हल चिह्न (्) लगा होगा। जैसे- क्, ल्, व्

★ 'र' के साथ 'उ' और 'ऊ' की मात्राएँ मध्य से जोड़ी जाती हैं।

उदाहरण-

र् + उ = रु (रुपया)

र् + ऊ = रू (रूप)

★ 'श' के साथ 'ऋ' की मात्रा जोड़कर 'ऌ' बनाया जाता है।

श् + ऋ = ऌ

वर्ण-विच्छेद

किसी शब्द के वर्णों को अलग-अलग करके लिखना वर्ण-विच्छेद कहलाता है।

वर्ण-विच्छेद का अभ्यास करने से शब्दों की सही वर्तनी और उनके उच्चारण की जानकारी प्राप्त होती है।

उदाहरणार्थ

क्ष = क् + ष् + अ

त्र = त् + र् + अ

ज्ञ = ज् + ज्ञ् + अ

श्र = श् + र् + अ

क = क् + अ

प = प् + अ

ल = ल् + अ

पर्व = प् + अ + र् + व् + अ

प्रण = प् + र् + अ + ण् + अ

ट्रक = ट् + र् + अ + क् + अ

इनके माध्यम से 'र' के उच्चारण का सही स्थान ज्ञात होता है।

यहाँ 'र' का उच्चारण पूर्ण व्यंजन 'र' नहीं बल्कि 'र्' के रूप में हो रहा है।

वाक्य = व् + आ + क् + य् + अ

मक्का = म् + अ + क् + क् + आ

यदि शब्द में व्यंजन आधा हो तो 'अ' उसके साथ नहीं लगाया जाता।

वसंत = व् + अ + स् + अं + त् + अ

गाँव = ग् + आँ + व् + अ

अतः = अ + त् + अः

‘अ’ अपने आप में पूर्ण स्वर है और स्वरों को खंडों में नहीं बाँटा जा सकता।

अनुस्वार (ँ), अनुनासिक (ँ) तथा विसर्ग (:) स्वर ‘अ’ के या अन्य स्वरों के साथ ही दर्शाए जाते हैं।